

# डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान २, मरकुस 1:1-13

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क की पुस्तक पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह मार्क 1:1-13 पर सत्र 2 है।

फिर से नमस्ते। मार्क के सुसमाचार पर काम करते हुए आपके साथ वापस आकर अच्छा लगा। हमारे पिछले व्याख्यान में हमने कुछ पृष्ठभूमि सामग्री देखी, सुसमाचार की शैली पर चर्चा की, और सुसमाचारों के बारे में कुछ ऐतिहासिक विचारों पर चर्चा की। लेकिन आज मैं उत्साहित हूँ क्योंकि हम वास्तव में मार्क के सुसमाचार में प्रवेश कर रहे हैं।

हम अध्याय एक के पहले भाग को देखने से पहले मार्क के सुसमाचार की संरचना के बारे में बात करके थोड़ा शुरू करने जा रहे हैं। और मार्क की संरचना करने के अलग-अलग तरीके हैं। कुछ लोग इसे भौगोलिक रूप से करना चाहते हैं, कुछ लोग इसे धार्मिक आंदोलन के रूप में देखते हैं।

मेरे हिसाब से, सबसे बढ़िया व्याख्या चार बुनियादी भाग हैं। आपके पास एक प्रस्तावना है, मार्क अध्याय 1, श्लोक 1 से 13 तक। आज हम मुख्य रूप से इसी पर विचार करेंगे, उसके बाद अगला भाग, जो कि काफी बड़ा भाग है, अध्याय 1 के श्लोक 14 से शुरू होकर अध्याय 8 के मध्य, 8:21 तक जाएगा।

अध्याय 8 के मध्य में पतरस के कबूलनामे को लंबे समय से एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में पहचाना जाता रहा है, जो कि मार्क के सुसमाचार का एक प्रमुख मोड़ है, और यह इस संरचना में परिलक्षित होता है। यदि आप चाहें तो, प्रस्तावना के बाद, इस दूसरे भाग को वास्तव में यीशु की सार्वजनिक सेवकाई, साथ ही उनके अधिकार सेवकाई के रूप में वर्णित किया गया है। इससे मेरा मतलब है कि यीशु के अधिकार का विषय सामने आ रहा है।

और मुझे लगता है कि ये दोनों ही बातें सही हैं। इन पहले आठ अध्यायों में निश्चित रूप से एक सार्वजनिक पहलू है। यीशु जो कुछ भी करता है, वह दूसरे लोगों के घरों या सभास्थलों में देखने लायक होता है।

इन पहले आठ अध्यायों में गैलीलियन फोकस भी है, और बहुत सारे विषय जो कवर किए गए हैं, जैसा कि हम देखेंगे, वास्तव में यीशु के अधिकार के सवाल को संबोधित करते हैं। और फिर मार्क के सुसमाचार में पीटर के कबूलनामे में एक बदलाव होता है जब पीटर पर दबाव डाला जाता है कि वह यीशु को कौन मानता है। वहाँ, हम न केवल भूगोल को बदलते हुए देखते हैं।

मेरा मतलब है कि हम यरूशलेम की ओर बढ़ना शुरू कर देते हैं। लेकिन हम मार्क के सुसमाचार में एक विषयगत बदलाव भी देखते हैं जहाँ मसीह की पीड़ा और मृत्यु बहुत अधिक प्रचलित हो जाती है। यहाँ तक कि शिक्षा भी शिष्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने लगती है।

और इसलिए, यह तीसरा भाग, जिसका शीर्षक है यीशु क्रूस की ओर मुड़े, और फिर अध्याय 16 में एक उपसंहार है, श्लोक 1 से 8 तक। अब, जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान में बात की थी, मार्क का अंत थोड़ा विवादास्पद है, इस संबंध में कि यह कहाँ समाप्त हुआ या कहाँ समाप्त नहीं हुआ और हमारे पास क्या है। इसलिए, श्लोक 1 से 8 में यह उपसंहार संभवतः उस संरचना के संबंध में थोड़ा सा तारांकन के साथ रखा गया है। इसलिए आज, हम मुख्य रूप से प्रस्तावना, मार्क 1 से 13 को देखने जा रहे हैं।

प्रस्तावना को देखते हुए, मैं चाहता हूँ कि हम प्रस्तावना में पेश किए जा रहे विषयों और थीम के बारे में एक विचार प्राप्त करना शुरू करें। किसी पुस्तक की शुरुआत अक्सर हमें इस बात की ओर उन्मुख करती है कि पुस्तक, पुस्तक का मुख्य भाग, किस बारे में होगी। साथ ही, मैं चाहता हूँ कि हम इस बात पर ध्यान दें कि इतने कम समय में कितना कुछ कवर किया गया है।

हमने पिछले सप्ताह मार्क की गति और कैसे मार्क बहुत तेज़ी से आगे बढ़ता है, के बारे में बात की थी। लेकिन बहुत तेज़ी से आगे बढ़ने के साथ-साथ वह बहुत धीमा भी हो जाता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि हम यहाँ जो देखने जा रहे हैं, उनमें से एक यह है कि मार्क 13 आयतों में वह सब कुछ बता देगा, जिसे मैथ्यू को, उदाहरण के लिए, करीब चार अध्यायों में बताना पड़ता है।

प्रस्तावना में हमें बहुत सारे सारांश कथन मिलते हैं। हमें बहुत सारी जानकारी मिलती है जो लगभग ऐसा लगता है जैसे यह मान लिया गया ज्ञान है। यीशु की कहानी के मुख्य तत्व, लेकिन वे तत्व भी जो आसानी से ज्ञात हो सकते थे।

तो, हमें जॉन द बैपटिस्ट का परिचय मिलता है, लेकिन हमें जॉन द बैपटिस्ट के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं मिलता। हमें बपतिस्मा और उसके मुख्य क्षण के बारे में पता चलता है, लेकिन हमें बपतिस्मा के इर्द-गिर्द होने वाली बातचीत नहीं मिलती। हमें प्रलोभन की कहानी का संदर्भ मिलता है, लेकिन हमें जंगल में जो कुछ हुआ उसका पूरा विवरण नहीं मिलता।

इस प्रस्तावना में, मार्क उस सामग्री के बड़े हिस्से से आगे बढ़ता है जिस पर मैथ्यू, ल्यूक और जॉन अधिक समय बिताते हैं, इस हद तक कि अंततः, वह धीमा हो जाता है। यह लगभग कछुए के बाल जैसी गति है। वह बहुत तेज़ी से चलता है, खरगोश की तरह, और फिर वह कछुए की तरह धीमा हो जाता है।

और यह धीमी गति ही है जिसे हम मार्क 1 पर अगले व्याख्यान में देखेंगे। लेकिन आइए देखें कि आज हमारे पास क्या है। और इसलिए, प्रस्तावना से शुरू करते हुए, हम पहले तीन छंदों पर पहुँचते हैं। यीशु, मसीहा, यीशु मसीह के बारे में खुशखबरी की शुरुआत, जैसा कि यशायाह, भविष्यवक्ता में लिखा गया है, मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेजूँगा जो तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा, जंगल में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।

यहाँ शायद श्लोक 1 का उल्लेख करना उचित होगा, जहाँ यह सुसमाचार की शुरुआत के बारे में कहता है। यह वही यूनानी शब्द है जिसके बारे में हमने पिछली बार बात की थी, यूएंगेलियन।

लेकिन यहाँ यह सुसमाचार की शैली के अर्थ में सुसमाचार नहीं है, बल्कि वास्तव में एक घोषणा है, वह पहलू।

तो, यह एक घोषणा की शुरुआत है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि पद 1 पूरी किताब के बारे में बात कर रहा है, जो कि पूरी किताब, सुसमाचार की शुरुआत, यानी मार्क के सुसमाचार का परिचय देने का एक तरीका है। हालाँकि, मुझे लगता है कि हम यहाँ पद 1 के साथ जो देखते हैं, यीशु, मसीहा के बारे में सुसमाचार की शुरुआत, संभवतः वास्तव में जॉन बैपटिस्ट द्वारा किए गए काम को कवर करती है।

यह घोषणा की शुरुआत मार्क के इस चर्चा का तरीका है कि यह घोषणा कि यीशु मसीहा हैं, परमेश्वर के पुत्र हैं, अनिवार्य रूप से जॉन बैपटिस्ट से शुरू होती है। और मुझे लगता है कि इसका एक कारण यह है कि यह यीशु, यीशु मसीह के बारे में अच्छी खबर की शुरुआत है, कुछ अनुवाद यीशु मसीहा, मसीह ग्रीक शब्द क्रिस्टोस का अंग्रेजी लिप्यंतरण है, क्रिस्टोस मसीहा के लिए ग्रीक शब्द है। और इसलिए यह यहीं से आता है।

और यहाँ जो बात ध्यान देने लायक है, वह है यीशु का संदर्भ। यह यीशु मसीह, यीशु मसीहा के बारे में शुभ समाचार की घोषणा की शुरुआत है। इसलिए, यह शुभ समाचार की शुरुआत का अर्थ नहीं है, सामान्य रूप से मसीहा के बारे में घोषणा की शुरुआत, या किसी तरह के बड़े वैचारिक तरीके से वादा किए गए मसीहा की शुरुआत, लेकिन यह बहुत खास है।

यीशु, एक विशिष्ट व्यक्ति के बारे में घोषणा, जॉन बैपटिस्ट से शुरू होती है। मुझे लगता है कि मार्क यहीं स्थित है। यह घोषणा कि यह यीशु मसीहा है, परमेश्वर का पुत्र है, वास्तव में जॉन बैपटिस्ट से शुरू होती है।

जॉन बैपटिस्ट ने इस विशेष व्यक्ति की ओर इशारा किया। और इसलिए, मुझे लगता है कि यही बात श्लोक 1 में हो रही है। और फिर, जैसा कि अप्रत्याशित नहीं होगा, हम जॉन बैपटिस्ट को यहाँ बाइबिल के पाठ से जुड़ा हुआ देखते हैं। यह यशायाह नबी में लिखा गया था, मैं अपने दूत को तुम्हारे आगे भेजूँगा जो तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।

जंगल में किसी की आवाज़ सुनाई दे रही है, प्रभु का मार्ग तैयार करो। मैं उस पर थोड़ा वापस आऊँगा। मैं उस पाठ और जॉन बैपटिस्ट के बारे में थोड़ा और बात करना चाहता हूँ।

क्योंकि, जैसा कि आप जानते हैं, चारों सुसमाचार अपनी कहानी यहीं से शुरू करते हैं। उनकी कहानी में जॉन बैपटिस्ट का एक मुख्य तत्व है। और इसलिए, हमारे लिए यह उपयोगी होगा कि हम इस बारे में थोड़ी बात करें कि जॉन बैपटिस्ट कौन था और जिस अंश का संदर्भ दिया जा रहा है, वह उससे कैसे संबंधित है।

यशायाह का यह अंश वास्तव में यशायाह से कहीं अधिक है। हमें लगता है कि पुराने नियम में दो, संभवतः तीन, अंश हैं जिन्हें एक साथ रखा जा रहा है और इस पाठ में प्रस्तुत किया जा रहा है। एक निर्गमन 23:20, पद 20 का पहला भाग, मलाकी 3:1 और फिर यशायाह 40, पद 3 का संयोजन है। हमें लगता है कि निर्गमन अंश को ध्यान में रखा जा सकता है, इसका कारण यह है

कि सेप्टुआजेंट में, जो हिब्रू बाइबिल का ग्रीक अनुवाद है, जिसे हम पुराना नियम कहेंगे, इस समय अवधि से उस के ग्रीक अनुवाद को सेप्टुआजेंट के रूप में संदर्भित किया जाता है।

सेप्टुआजेंट में, शुरुआत लगभग शब्दशः होती है, जिसमें परमेश्वर ने जंगल में इस्राएलियों के आगे एक स्वर्गदूत भेजने का वादा किया है। इसलिए, हमें लगता है कि निर्गमन 23:20, पद 20 का पहला भाग, यहाँ ध्यान में रखा जा सकता है। मलाकी में, विचाराधीन दूत, जिसे संयोग से बाद में मलाकी 4.6 में एलियाह के रूप में पहचाना जाता है, लेकिन यहाँ मलाकी में, जो इस मार्ग का हिस्सा है, इस्राएल को शुद्ध करने और दुष्टों का न्याय करने के लिए परमेश्वर के अंतिम युगांतिक आगमन की तैयारी करता है।

यह एलियाह की पहचान वास्तव में हम देखेंगे जब हम मार्क 9 में प्रवेश करेंगे कि यीशु जॉन बैपटिस्ट को इस युगांतशास्त्रीय भविष्यवक्ता के रूप में, इस एलियाह के रूप में पहचानेंगे। हम इसके बारे में और बात करेंगे। लेकिन मलाकी में एक महत्वपूर्ण बात, मलाकी संदर्भ में, अंश में लिखा है, मेरा मार्ग तैयार करो।

जबकि मार्क में इसे बदलकर अपना रास्ता तैयार करो कर दिया गया है। इसलिए मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है जो हुआ है। मुझे लगता है कि मार्क हमें जॉन बैपटिस्ट को यह पाठ देकर बहुत ही गहरी बात बता रहे हैं, लेकिन मलाकी के पाठ को बदलकर मेरा रास्ता तैयार करो के बजाय अपना रास्ता तैयार करो कर रहे हैं, वह ईश्वर के साथ यीशु के संबंध के बारे में कुछ कह रहे हैं।

जबकि मलाकी में परमेश्वर कह रहा है कि मेरा मार्ग तैयार करो, यहाँ सर्वनाम यीशु से जुड़ा हुआ है। और इसलिए, यह अर्थ है कि परमेश्वर का युगांतिक आगमन, परमेश्वर की वापसी, परमेश्वर के महान कार्य की योजना और समय की परिणति, इस्राएल को शुद्ध करने और दुष्टों का न्याय करने का आगमन, यह सब यीशु के आगमन के साथ घटित हो रहा है। बेशक, इस अंश का प्रमुख मूल यशायाह 40, पद 3 है। और मरकुस यहाँ यशायाह पर जोर दे रहा है।

अब, उनका यह कहना गलत नहीं है कि यह यशायाह से है और मलाकी या संभवतः निर्गमन के अंश का उल्लेख नहीं किया है, हालांकि यह थोड़ा कम निश्चित है। यह सामान्य अभ्यास के भीतर ही होता कि प्रमुख संदर्भ के भीतर ही इसका पता लगाया जाता और इस अंश के लिए प्राथमिक संदर्भ के रूप में यशायाह का हवाला दिया जाता। जिन लोगों ने इसे सुना होगा, उन्होंने आसानी से यशायाह 40 सुना होगा और मलाकी को भी सुना होगा और मार्क को यहाँ कुछ अजीब नहीं माना होगा।

वास्तव में, यशायाह, यशायाह का महान संदेश, पीड़ित सेवक का संदेश, युगांतकारी मुक्ति, नई निर्गमन भाषा जिसे हम यशायाह 40 में देखते हैं, अंतिम मुक्ति, मार्क के सुसमाचार का एक मजबूत हिस्सा है। और इसलिए, जॉन बैपटिस्ट के आगमन को यशायाह 40 में शामिल करना, भले ही अन्य अंशों के साथ एक संयोजन हो, बहुत मायने रखता है। अब, जब हम जॉन बैपटिस्ट के बारे में सोचते हैं, तो शायद उस पर थोड़ा समय बिताना उचित होगा क्योंकि वह ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण था, खासकर नए नियम की दुनिया के लिए।

मत्ती 11 में यीशु ने दावा किया कि जॉन द बैपटिस्ट एक भविष्यवक्ता से कहीं बढ़कर था। इस बात पर चर्चा होती है कि वह कैसे सबसे महान था। नए नियम के अन्य सभी व्यक्तियों के विपरीत, केवल यीशु और जॉन द बैपटिस्ट की मृत्यु को ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

जॉन द बैपटिस्ट के कई अनुयायी थे। वास्तव में, यदि आप प्रेरितों के काम को पढ़ते हैं, तो पॉल को कुछ ऐसे लोग मिलते हैं जो अभी भी जॉन द बैपटिस्ट का अनुसरण कर रहे हैं और भ्रमित हैं या शायद उनकी जानकारी अधूरी है। जैसा कि हम जानते हैं, यीशु को जॉन ने बपतिस्मा दिया था।

यीशु का संदेश राज्य के आगमन के बारे में जॉन के संदेश से बहुत मिलता-जुलता है। जॉन द बैपटिस्ट का उपयोग सुसमाचारों में यीशु के साथ तुलना और अंतर करने के लिए किया जाता है। कई मायनों में, यह जॉन द बैपटिस्ट की महानता है जिसे यीशु की और भी अधिक महानता दिखाने के लिए एक आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

हर जगह सुझाव दिए जा रहे हैं, जिनके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, एलिय्याह, युगांतशास्त्रीय एलिय्याह के बारे में, यह अपेक्षित व्यक्ति जो मार्ग तैयार करने के लिए आएगा। जॉन बैपटिस्ट की मृत्यु यीशु की सेवकाई का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मार्क इसे यीशु की सेवकाई की शुरुआत के रूप में उद्धृत करेंगे।

ल्यूक हमें जॉन द बैपटिस्ट के बारे में बहुत कुछ बताता है जो एक पुजारी परिवार में, वृद्ध माता-पिता के यहाँ पैदा हुआ था। यदि आप चाहें तो एक चमत्कारी गर्भाधान हुआ, बस इस अर्थ में कि एलिजाबेथ और जकर्याह को बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़ा माना जाता था, और फिर भी वे जॉन से गर्भवती हो गईं। इस बात के बहुत से तर्क दिए गए हैं कि जॉन का संबंध कुमरान नामक समुदाय से हो सकता है, जो कुमरान के पास का समुदाय है।

मृत सागर की खोपड़ियाँ इसके साथ जुड़ी हुई हैं। उस संबंध का एक हिस्सा इस तथ्य से उपजा है कि यशायाह 40, श्लोक 3, उस समुदाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और ऐसा लगता था कि कुछ आहार और कपड़ों का संबंध था। लेकिन मुझे लगता है कि यह कारण से ज़्यादा संयोग है।

इस समय प्रारंभिक यहूदी धर्म मसीहाई आशा से भरा हुआ था, और इसने कई रूप लिए, और यह देखना अप्रत्याशित नहीं है कि यशायाह 40 जैसी आयतें विभिन्न समूहों पर लागू होती हैं। आगे बढ़ने से पहले कुछ अंतिम छोटी टिप्पणियाँ। जॉन द बैपटिस्ट, कुछ बातें जो हम उसके बारे में जानते हैं।

वह जंगल में था। उसने बड़ी भीड़ को आकर्षित किया। उसने बपतिस्मा दिया।

जल बपतिस्मा का एक प्रतीकात्मक कार्य था। उनकी भीड़ और उनके संदेश को देखते हुए यह देखना आसान है कि उनके इर्द-गिर्द एक मसीहाई क्षमता विकसित हुई थी। हालाँकि हमें स्पष्ट होना चाहिए, उन्होंने कभी भी अपने बारे में ऐसा दावा नहीं किया।

जॉन द बैपटिस्ट को यह बात बिलकुल स्पष्ट थी कि यह यीशु ही थे। जब हम उनके कपड़े, उनके पहने हुए कपड़े और उनके बालों को देखते हैं, और वे क्या खाते हैं, तो यह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के साथ बहुत मेल खाता है, जहाँ आप क्या पहनते हैं, क्या खाते हैं, क्या करते हैं, यह सब एक शिक्षाप्रद परवलयिक प्रभाव था। तो ऐसा नहीं था कि जॉन द बैपटिस्ट जंगल में किसी तरह का पागल था, बल्कि वह अपने हर काम में एक संदेश दे रहा था, वह जिस जगह पर था, जहाँ जंगल में पुराने नियम का एक मजबूत फोकस है, लेकिन उसके कपड़ों में भी, जिसमें वास्तव में एलिजा में कुछ दिलचस्प बाल संबंध और लबादा संबंध हैं।

हो सकता है कि कुछ कपड़ों के मामले में एलिय्याह का स्पष्ट संदर्भ भी हो। लेकिन, मुझे लगता है, उसके कपड़ों और उसके खाने से इसराइल के शासकों के बीच लालच और वैभव के बारे में एक निर्णय व्यक्त हो रहा था। इसलिए उसने जो पहना था, उससे भी वह एक बयान दे रहा था।

जॉन द बैपटिस्ट का संदेश यह भी था कि न्याय आने वाला था। राज्य के आगमन के साथ उन लोगों पर न्याय आएगा जो परमेश्वर के विरोध में खड़े थे और जो शासक थे, खासकर इस्राएल के, जो परमेश्वर के नाम पर अपने पद का फायदा उठा रहे थे। वास्तव में, अन्य सुसमाचारों में यह बात बहुत स्पष्ट रूप से कही गई है।

बेशक, बाइबल में सबसे ज़्यादा चर्चित अपमान तब होता है जब जॉन बैपटिस्ट आने वाले धार्मिक नेता को सांपों का झुंड कहता है और पूछता है कि उन्हें आने वाले विनाश के बारे में किसने चेतावनी दी, लगभग यह जानना चाहता है कि वे पहले स्थान पर क्यों होंगे। लेकिन यहाँ जॉन बैपटिस्ट के बारे में थोड़ा सा है, और मुझे लगता है कि हमारे लिए जॉन बैपटिस्ट पर विचार करना महत्वपूर्ण है कि मार्क उसे कैसे प्रस्तुत कर रहा है। जॉन बैपटिस्ट के साथ, हमारे पास यह चरित्र है जो ईश्वर ने जो कहा था उसके बीच एक संबंध बनाता है, यशायाह के पीड़ित सेवक का आना, और एक का आना, ईश्वर का युगांतिक आगमन।

वह क्षण जिसकी आशा की जा रही थी, अब साकार होने जा रहा है। और इसलिए, हम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले में एक जैविक संबंध देखते हैं जो परमेश्वर ने परमेश्वर और उसके लोगों के इतिहास में किया था और जो परमेश्वर अब मसीह के आगमन के साथ कर रहा था। और मुझे लगता है कि हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन, एक जानकारीपूर्ण कथन भी मिलता है, अगर आप चाहें तो, कि मार्क यीशु के बारे में कैसे बात करेंगे, और हमें यह श्लोक 7 में मिलता है। तो, यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला बोल रहा है, और यह उसका संदेश था।

मेरे बाद वह आएगा जो मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली है। और फिर वह आगे कहता है, वह इस बात की सीमा को समझता है कि मैं किसके जूतों की डोरी से नीचे झुककर खोलने के योग्य नहीं हूँ, यह एक बहुत ही शर्मनाक, नीच कार्य है। लेकिन यह मार्क के सुसमाचार में किसी व्यक्ति के होठों पर, यीशु के बारे में पहली तरह का वर्णन है। ध्यान दें कि मेरे बाद वह आएगा जो मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली है। मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली व्यक्ति संभवतः ग्रीक पाठ का एक बहुत अच्छा अनुवाद होगा, जहाँ शक्तिशाली एक प्रकार का वर्णनकर्ता है जिसका उपयोग किया जा रहा है।

और इसलिए, जब जॉन बैपटिस्ट, यीशु के बारे में बात करता है, तो वह कहता है, मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली। यह वास्तव में इस बात के लिए मंच तैयार करता है कि हम मार्क को यीशु के अधिकार के साथ क्या करते हुए देखेंगे, कैसे, बार-बार, हम यीशु की ताकत और यीशु के अधिकार के इन संदर्भों को खोजने जा रहे हैं। इसलिए, मार्क में, जब वह जॉन बैपटिस्ट के आगमन को कवर कर रहा है, तो वह इसे बहुत संक्षिप्त रखता है, लेकिन वह इसे उस व्यक्ति से जोड़ता है जो रास्ता तैयार करेगा और वह इसे यीशु की ताकत से जोड़ता है।

और आखिरी बात जो मार्क हमें श्लोक 8 में याद दिलाता है वह है जॉन का कहना, मैं तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। यह दिलचस्प है कि जॉन का बपतिस्मा वास्तव में क्या था, इस पर बहुत बहस है। और मुझे लगता है कि यह कहना उचित है कि यह उसी प्रकार का बपतिस्मा नहीं लगता है जिसे शुरुआती चर्च तब स्वीकार करता था।

मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि जॉन का बपतिस्मा - पश्चाताप करो और बपतिस्मा लो - कुछ हद तक उससे मिलता-जुलता है, लेकिन जॉन इस तरह के सामूहिक पश्चाताप की ज़रूरत के बारे में इज़राइल के लोगों से बात कर रहा है। और सवाल यह उठता है कि पानी उसमें किस तरह से फिट बैठता है? कई सिद्धांत हैं। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यह कुमरान समुदाय द्वारा गैर-यहूदी धर्मांतरित लोगों के साथ किए जाने वाले काम के समान है। फिर से, मुझे नहीं लगता कि यह उतना मज़बूत है।

लेकिन निष्पक्षता से कहें तो, हमारे पास जॉन द्वारा किए जा रहे कामों के समान बहुत सारे उदाहरण नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, जॉन ऐसा कोई अभ्यास नहीं कर रहा था जो एक आम, प्रसिद्ध अभ्यास था जिसके बारे में हम कह सकें कि, आह, जॉन यही कर रहा है। तो, हमें उसके बपतिस्मा के बारे में क्या सोचना चाहिए? खैर, अगर जॉन पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के समान तरीके से काम कर रहा है, जिसका अर्थ है कि उसके कपड़े, उसके तौर-तरीके, उसका भोजन और उसका स्थान सभी संदेश का हिस्सा हैं, तो मुझे लगता है कि शायद यही वह जगह है जहाँ हम उसके बपतिस्मा को सबसे अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

उनका बपतिस्मा, जल बपतिस्मा के साथ कुछ प्रतीकात्मक घटित होता है जो उनके संदेश के अनुरूप है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, पूरे सुसमाचार में हम उनके संदेश में जो कुछ देखते हैं, वह यह है कि न्याय का आगमन है, न्याय का समय आ गया है, और कुल्हाड़ी जड़ पर है। तो, पानी को सबसे अच्छी तरह से सफाई या धोने के शुद्धिकरण अनुष्ठान के रूप में नहीं समझा जा सकता है, लेकिन शायद पानी के विचार के दूसरे प्रतीक के साथ सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है, जो अक्सर न्याय होगा, जो अराजकता होगी, जो कयामत होगी, बाढ़, यदि आप उस कल्पना के बारे में सोच सकते हैं, तो शायद, नूह से न्याय भी था।

और हो सकता है कि जॉन लोगों से यह स्वीकार करने के लिए कहे कि वे न्याय के योग्य हैं, कि वे अवज्ञाकारी लोग रहे हैं, और फिर प्रतीकात्मक रूप से उस न्याय में जाना और फिर बाहर आना, जो कि ईश्वर की कृपा या ईश्वर की दया को दर्शाता है। यह उनके पापों के पश्चाताप के संदेश के साथ फिट बैठता है। यह दिलचस्प है, फिर से, मुझे नहीं पता कि हम कभी भी यह जान पाएंगे कि उनका बपतिस्मा वास्तव में क्या कर रहा था।

मुझे लगता है कि यह तथ्य कि यीशु बपतिस्मा लेने के लिए सहमत हुए, यहाँ हमारी मदद करता है। जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए सहमत होते हैं, तो मार्क हमें यीशु और यूहन्ना के बीच की बातचीत के बारे में ज़्यादा नहीं बताता है, लेकिन मैथ्यू बताता है, और यह भावना है जहाँ यीशु पुष्टि कर रहे हैं और सहमत हैं कि उनके लिए वहाँ रहना सही है जहाँ हमारे पापी होने चाहिए, शायद न्याय के तहत, और फिर क्रूस की प्रत्याशा में। फिर से, यह कुछ चीजों के लिए कुछ सुझाव है जिनके बारे में आपको सोचना चाहिए।

लेकिन यूहन्ना अपने बपतिस्मा की तुलना किससे करता है? या आत्मा के बपतिस्मा से जो यीशु करेगा। और मुझे लगता है कि यहाँ यशायाह 4 और यशायाह 11 के साथ-साथ यहजेकेल 26, 39, योएल 2 के कुछ संदर्भ हैं, मसीहा और आत्मा के पुनरुत्थान और आत्मा की उपस्थिति का विचार एक अनोखे तरीके से। इसलिए, अपेक्षित मसीहा और परमेश्वर की आत्मा की उपस्थिति एक साथ आने की उम्मीद की गई थी और उसकी ओर देखा गया था।

इसलिए, कई मायनों में, मुझे लगता है कि जॉन इस वास्तविकता की ओर इशारा कर रहा है। लेकिन साथ ही, अगर आप आत्मा के बारे में उसी तरह सोचते हैं जैसे हम पानी के बारे में सोचते हैं, कि आत्मा का आगमन, जहाँ अगर पानी न्याय का प्रतीक था, लेकिन न्याय से बाहर आने का भी, शायद, उस बपतिस्मा में, हम आत्मा के साथ भी ऐसा ही देख सकते हैं, आत्मा के आगमन के साथ, कि वहाँ ईश्वर की उपस्थिति है, जिसमें न्याय का गुण है, लेकिन सुरक्षा और आगमन और आराम की उपस्थिति भी है। लेकिन जहाँ पानी, मुझे लगता है, जॉन के लिए प्रतीकात्मक है, जॉन जो कह रहा है वह यह है कि आत्मा नहीं है।

यह प्रामाणिक है। जॉन द्वारा इस्तेमाल किया गया यह कोई रूपक नहीं है, बल्कि इसकी अंतिम वास्तविकता की घोषणा है। इसके बारे में सोचना ही दिलचस्प है।

बेशक, मार्क के बारे में जो बात सबसे ज़्यादा निराशाजनक है, वह यह है कि मार्क हमें ज़्यादा कुछ नहीं बताते। वे इसे बहुत ही संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं। फिर से, लगभग यही धारणा है कि शायद यह मान लिया गया ज्ञान है।

शायद ये यीशु की कहानी के वे मुख्य तत्व हैं जिन्हें आरंभिक चर्च जानता था और जिनका उल्लेख किया जाना आवश्यक था। जॉन बैपटिस्ट की कहानी के बिना यीशु की कहानी शुरू नहीं हो सकती। फिर से, अगर मैं इन प्रमुख विचारों पर गौर करूँ, तो मुझे लगता है कि प्रस्तावना के इन पहले आठ छंदों में दो मुख्य विचार काम कर रहे हैं।

एक यह है कि यीशु को परमेश्वर और उसके लोगों के इतिहास की पूर्णता के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। परमेश्वर की महान कहानी, वह महान कहानी जिसकी ओर यशायाह इशारा कर रहा था, और यदि निर्गमन और मलाकी का संकेत है, तो वह महान कहानी अब अपने चरम पर आ रही है। परमेश्वर और उसके लोगों के इतिहास के केंद्र में कुछ महत्वपूर्ण घटित होने वाला है।

इसके अलावा, जैसा कि मैंने कहा, यीशु अधिक शक्तिशाली है और उसका अधिकार और उसकी शक्ति है। प्रस्तावना के इन पहले आठ छंदों में, ये दो चीजें हैं जिन्हें मैं चाहता हूँ कि हम



ध्यान में रखें। अब थोड़ा आगे बढ़ते हुए, जैसा कि हम प्रस्तावना के बारे में सोचना जारी रखते हैं, मैं छंद 9 से 13 को देखना चाहता हूँ।

उस समय, यीशु गलील के नासरत से आए और यरदन में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया गया। जैसे ही यीशु पानी से बाहर आ रहे थे, उन्होंने स्वर्ग को खुलते और आत्मा को कबूतर की तरह अपने ऊपर उतरते देखा। स्वर्ग से एक आवाज़ आई, तुम मेरे बेटे हो जिसे मैं तुमसे प्यार करता हूँ मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ।

आत्मा ने तुरन्त उसे जंगल में भेज दिया और वह जंगल में 40 दिन तक शैतान द्वारा परीक्षा में रहा। वह जंगली जानवरों के साथ था और स्वर्गदूत उसकी सेवा करते थे। फिर से, यीशु की कहानी में बहुत ही सामान्य तत्व, एक जाना-पहचाना तत्व, लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक नोट हैं।

वैसे, जिस तरह से यह शुरू होता है वह भी श्लोक 9 से दिलचस्प है। उस समय के कुछ अनुवादों से यह पता चलता है कि मार्क यहाँ शुद्ध जीवनी नहीं लिख रहे हैं। उन्होंने समय के बड़े हिस्से को छोड़ दिया है और अगर आप चाहें तो इसे एक समय अवधि के भीतर ही सीमित कर रहे हैं। मुझे लगता है कि उन दिनों का मतलब यीशु की सांसारिक सेवकाई से था।

मुझे लगता है कि वे दिन उसी की ओर इशारा करते हैं। बेशक, यीशु नासरत से आते हैं। हम नासरत के बारे में जो कुछ भी जानते हैं उसका एकमात्र कारण यह है कि यीशु वहाँ से आए थे।

यह एक अज्ञात, अप्रासंगिक शहर था। पुराने नियम और तल्मूड में इसका उल्लेख नहीं है।

जोसेफस ने इसका उल्लेख नहीं किया है। न्यू टेस्टामेंट में इसका उल्लेख है। मुझे लगता है कि इससे हमें ऐतिहासिक साक्ष्य मिलते हैं।

अगर कोई ऐसी कहानी बनाना चाहता है जिसमें वह नायक को ऊपर उठाना चाहता है, तो आप उसे नाज़रेथ से नहीं ढूँढ़ेंगे। आप बेथलेहम से ही जुड़े रह सकते हैं। बेथलेहम का एक भविष्यसूचक संदर्भ था।

हम जानते हैं कि यीशु का जन्म बेथलेहम में हुआ था। आप शायद गलील के बारे में भी बात करें, लेकिन नाज़रेथ के बारे में नहीं। मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है कि नाज़रेथ अब शायद सबसे प्रसिद्ध प्राचीन शहरों में से एक है।

क्यों? क्योंकि यीशु यहीं से आए थे। दिलचस्प बात यह है कि इतिहास में नासरत के बारे में लोगों की राय का एकमात्र संदर्भ जॉन अध्याय 1 में है, जब नतनएल ने इसका मज़ाक उड़ाया और आश्चर्य जताया कि वहाँ से कुछ भी कैसे आ सकता है। इसलिए, हमारे पास यीशु के मंत्रालय की यह शुरुआत है।

वह नासरत में एक बहुत ही साधारण परिवार से आता है। उसे जॉर्डन में जॉन द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है। फिर इस बपतिस्मा पर ध्यान दें, यहाँ क्या होता है।

ठीक वैसे ही, फिर से, यह ठीक वैसे ही, आप इसे तुरंत और फिर बहुत कुछ देखते हैं। यह उस गति का हिस्सा है जिस पर मार्क हमें आगे बढ़ाता रहता है। जैसे ही वह पानी से बाहर आ रहा था, उसने, यानी यीशु ने, स्वर्ग को फटते हुए देखा।

यहाँ पर बहुत ही आकर्षक भाषा का प्रयोग किया गया है, जिसे फाड़ दिया गया है। यहाँ पर जो शब्द इस्तेमाल किए जा रहे हैं, वे कपड़े के फटने के विचार को दर्शाते हैं। अंग्रेजी शब्द schism ग्रीक शब्द से आया है जिसका यहाँ पर प्रयोग किया जा रहा है, जिसे आप चाहें तो फाड़ भी सकते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि मैं इस बात की ओर इसलिए इशारा कर रहा हूँ क्योंकि मैथ्यू और ल्यूक ने इस भाषा का इस्तेमाल नहीं किया है। मैथ्यू और ल्यूक स्वर्ग के खुलने की बात करते हैं जैसे कि कोई दरवाज़ा खोला जा सकता है या कोई दरवाज़ा खिसकाया जा सकता है। जबकि मार्क स्वर्ग के फटने की बात करता है।

आकर्षक परिवर्तन। और मुझे नहीं लगता कि यह आकस्मिक है। बेशक, हमारे पास यशायाह 64 1 जैसी जगहें हैं, ओह, काश तुम आकाश को चीर कर नीचे आ जाते, कि पहाड़ तुम्हारे सामने कांप उठते।

लेकिन यह फटी हुई भाषा यहाँ केवल यशायाह से नहीं ली गई है, बल्कि मुझे लगता है कि यह मार्क के सुसमाचार में अगले क्षण की आशा कर रही है जहाँ हम उसी शब्द का उपयोग होते देखेंगे, और वह मार्क 15 पद 38 में है जब यह पर्दा फटा हुआ है। वह पर्दा जो मंदिर, परम पवित्र स्थान को बाकी परिसर से अलग करता है, और यह मसीह की मृत्यु पर होता है। और यह, मेरा मानना है, आकस्मिक नहीं है क्योंकि, दूसरे मंदिर ब्रह्मांड विज्ञान में, यह अक्सर माना जाता था कि स्वर्गीय क्षेत्र, स्वर्गीय स्थान, एक पर्दा द्वारा सांसारिक क्षेत्र से अलग किया गया था।

अगर आप कहें तो यह एक बहुत बड़ा ब्रह्माण्डीय ताना-बाना था जो दोनों को अलग करता था। और वास्तव में, मंदिर का निर्माण और मंदिर का डिज़ाइन इस बात को दर्शाने के लिए किया गया था। वह पर्दा जो भीतरी हिस्से को बाहरी हिस्से से अलग करता था और फिर एक और पर्दा भी था, उसे प्रतीकात्मकता के साथ प्रस्तुत किया गया था।

सृष्टि का प्रतीकवाद, ब्रह्मांड का प्रतीकवाद, ईडन गार्डन को प्रतीकात्मक रूप में फिर से बनाने का विचार मंदिर के डिज़ाइन में एक तरह से प्रस्तुत किया गया था। मैं यहाँ अपनी बात रखना चाहता हूँ। उदाहरण के लिए, पुजारी, जब वे आंतरिक गर्भगृह से बाहर होते थे, जब वे, दूसरे शब्दों में, सांसारिक क्षेत्र में होते थे, तो उनके वस्त्रों पर अक्सर ऐसे प्रतीक होते थे जो सृष्टि को व्यक्त करते थे।

अगर आप चाहें तो यह उस क्षेत्र को दर्शाता है जिसमें वे काम कर रहे थे, जिसमें वे सेवा कर रहे थे। लेकिन जब वे पर्दे से होकर भीतरी क्षेत्र में पहुँचे, तो उन्होंने अपने वस्त्र बदलकर पूरी तरह से सफेद कर लिए। अब, यह इस बात का संकेत था कि वे स्वर्ग में थे।

वे एक अनोखी जगह पर थे जो स्वर्गीय स्थान पर थी। और उनके वस्त्र प्रदान किए गए थे। और इसलिए, उन्होंने अपने कपड़े कब बदले? बेहतर तरीके की कमी के कारण, जब वे पर्दे से गुज़रे।

फिलो इस विचार को तब उठाते हैं जब वे दिव्य लोगो के बारे में बात करते हैं और वे बताते हैं कि कैसे दिव्य लोगो, यह आकृति जो एक सैद्धांतिक आकृति है, पर्दे से गुज़रेगी और सृष्टि के तत्वों को ग्रहण करेगी। मुद्दा यह है कि स्वर्ग का फटना और मंदिर में पर्दे का फटना एक ही बात कहने के दो तरीके हैं। जो अलग रखा गया था वह अब फट गया है।

और इसलिए, इसमें एक सर्वनाशकारी गुण है, रहस्योद्घाटन जो घटित हो रहा है। लेकिन ये ये दिलचस्प बुकएंड हैं। और अगर मैं कहूँ, तो एक और तत्व भी है जो इन दोनों को जोड़ता है।

इस पहले पाठ में, स्वर्ग के फटने पर, परमेश्वर यीशु के बारे में कुछ बोलते और घोषणा करते हैं, जिसे हम यीशु के पुत्रत्व के बारे में देखेंगे। मार्क 15 में, जब मंदिर में यह पर्दा, सांसारिक मंदिर, अलग हो जाता है, फट जाता है, तो यह उसी समय होता है जब मसीह कौन है, इसका एक और कबूलनामा होता है। इस बार परमेश्वर द्वारा नहीं, इस बार एक रोमन रक्षक द्वारा यीशु की मृत्यु पर विचार करते हुए और यह कहते हुए, निश्चित रूप से यह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र होना चाहिए।

तो, आपके पास प्रतीकात्मक और वास्तविक अलगाव हैं, जो अलग हो गया था, अब प्रस्तुत किया जा रहा है। और आपके पास दोहरी स्वीकारोक्ति है, एक ईश्वर द्वारा, एक मनुष्य द्वारा। और इससे भी अधिक रोचक बात यह है कि जब हम मार्क के सुसमाचार को देखते हैं, तो हम देखेंगे कि अक्सर, जब कोई व्यक्ति मार्क के सुसमाचार में यीशु के बारे में स्वीकारोक्ति करता है, तो उन्हें चुप रहने के लिए कहा जाता है; उन्हें डांटा जाता है, उन्हें सुधारा जाता है।

मुझे लगता है कि मार्क ने इन तत्वों को साहित्यिक कारणों से चुना है, क्योंकि वे ध्यान आकर्षित करते हैं। अचानक, ऐसा लगता है कि कोई व्यक्ति केवल तभी सही बोलता है जब भगवान बोलता है। जब कोई और बोलता है, तो वे या तो शैतानी होते हैं या फिर गलत होते हैं, जब तक कि हम रोमन सेंचुरियन तक नहीं पहुँच जाते।

और फिर अचानक, हमारे पास यीशु के बारे में एक स्वीकारोक्ति है जिसे सुधारा नहीं गया है, जिसे डांटा नहीं गया है, जिसे चुप नहीं कराया गया है। ऐसा लगता है जैसे मार्क पाठक से पूछ रहा है कि वह बन जाए, जानना चाहे, यह कब कहना ठीक है कि यीशु कौन है? और यह क्रूस पर है कि वह इस ओर निर्माण कर रहा है, और वह इस फाड़ने वाली भाषा, इस महत्व का उपयोग करके ऐसा करता है। यहाँ जो कहा गया है, जो घटित होता है, उसे देखते हुए, आपके पास सबसे पहले आत्मा का आगमन है।

हम इस बारे में पहले ही थोड़ी बात कर चुके हैं। यशायाह 11, आयत 2 से 4, आने वाले मसीहा के बारे में बात करते हैं, जिस पर प्रभु की आत्मा विश्राम करेगी, जो परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरता को दर्शाता है, लेकिन आत्मा का आना उस मसीहाई पहचान का हिस्सा है। तो, यहाँ आपके पास आत्मा का आगमन है, जहाँ आपके पास परमेश्वर पिता है, आत्मा का यीशु पर विश्राम करना, मुझे

लगता है कि यह कहने के उद्देश्य से किया गया है कि जो भविष्यवाणी की गई थी वह अब आ गई है।

बेशक, आपके पास पुत्र है, इसलिए यहाँ त्रिएकता का चित्र है, साथ ही यीशु की सेवकाई भी शुरू होने वाली है। आपके पास कबूतर का संदर्भ है, जो दिलचस्प है। कबूतर को संभवतः क्रियाविशेषण के रूप में नहीं, बल्कि विशेषण के रूप में समझा जाना चाहिए।

इससे मेरा मतलब है कि यह कबूतर की तरह उतरा, कबूतर की तरह दिख रहा था, न कि कबूतर की तरह उतरता है, अगर यह समझ में आता है। यहाँ क्यों? शायद नूह की कहानी के उद्धार की एक प्रतिध्वनि है, शायद, यह विचार है कि, फिर से, पानी न्याय है, कबूतर न्याय से मुक्ति है। शायद यहाँ यह तस्वीर सामने आ रही है।

यदि ऐसा है, तो यह मेरे विचार का समर्थन करेगा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के संदेश और उसके बपतिस्मा में विनाश के न्याय के संकेत थे, कि यीशु परमेश्वर को उद्धार दिलाने के लिए स्वयं विनाश को अपने ऊपर ले लेता है। और फिर, बेशक, आपके पास परमेश्वर द्वारा यह महान घोषणा है, परमेश्वर की आवाज़ बोल रही है। मार्क में ध्यान दें कि यीशु ने अभी तक कुछ भी नहीं किया है, जिसका अर्थ है कि यह पुत्रत्व, पुत्रत्व का यह रहस्योद्घाटन, यीशु के कर्मों के आधार पर नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व के आधार पर है।

और मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि प्राचीन दुनिया में ईश्वर का पुत्र घोषित होना कोई अज्ञात वास्तविकता नहीं थी। यहूदी धर्म में, उदाहरण के लिए, प्राचीन इज़राइल में, स्वर्गदूतों को ईश्वर का पुत्र कहा जाता था, राजाओं को ईश्वर का पुत्र कहा जाता था, इज़राइल को भी ईश्वर का पुत्र कहा जाता था। और उनमें से प्रत्येक के लिए एक आज्ञाकारिता का भाव था, एक विशिष्ट तरीके से ईश्वर की आज्ञा मानने के लिए अलग से अलग की गई अद्वितीय संस्थाएँ।

और मुझे लगता है कि यह बात यीशु के बारे में बहुत कुछ बताती है। लेकिन ग्रीको-रोमन दुनिया में भी, सम्राटों को ईश्वर का पुत्र बताया जाता है, महान नायक जैसे सिकंदर महान जब मिस्र में थे, तो उन्हें ईश्वर का पुत्र घोषित किया गया। सीज़र ऑगस्टस ने अपने दत्तक पिता जूलियस सीज़र की मृत्यु के बाद यह उपाधि ग्रहण की।

लेकिन जब कोई ग्रीको-रोमन व्यक्ति ईश्वर का पुत्र घोषित किया जाता था, तो यह अक्सर उनके द्वारा किए गए महान कार्य के कारण होता था, आमतौर पर उनकी मृत्यु के बाद, कभी-कभी महान उपलब्धियों के बीच में। लेकिन यहाँ हमारे पास यीशु के पुत्र होने की घोषणा है, और मार्क ने अभी तक कुछ भी नहीं किया है, कोई महत्वपूर्ण काम नहीं किया है। इसलिए यह इस बात की घोषणा है कि वह कौन है, इस आधार पर कि वह कौन है, न कि इस आधार पर कि उसने क्या किया है।

और फिर स्वर्ग से आवाज़ आती है, जो कि ईश्वर की आवाज़ होती है, कहती है, मैं यहाँ कहाँ हूँ? अरे हाँ, तुम मेरे बेटे हो। यह श्लोक 11 है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। वैसे, तुम पर ज़ोर दिया गया है।

इस पर जोर दिया गया है, जिस तरह से ग्रीक भाषा का निर्माण किया गया है। और फिर से, कई अंशों का उद्धरण है जैसा कि हमने शुरुआत में देखा था। हमारे पास यहाँ भजन 2-7 है, जो एक दाऊद के सिंहासनारूढ़ होने का भजन है, मसीहा, दाऊद के राजवंश की घोषणा है।

प्रिय भाषा उत्पत्ति 22:2 का संकेत हो सकती है। प्रिय भाषा भजन 2:7 से नहीं आती है। लेकिन बेशक, इसहाक, परमेश्वर इसहाक के बारे में अब्राहम से कहता है, तुम्हारा इकलौता बेटा, तुम्हारा प्रिय, तुम्हारा इकलौता बेटा जिसे तुम प्यार करते हो, यह सुझाव देते हुए, अगर यह सही है, तो यहाँ एक संभावित यीशु-इसहाक संबंध खींचा जा रहा है।

और इससे भी अधिक बलिदान की इच्छा, अब्राहम की इसहाक की बलि देने की इच्छा, और परमेश्वर की अपने बेटे की बलि देने की इच्छा की उपमा। और फिर मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, यशायाह 42:1 से आता है, जहाँ परमेश्वर के चुने हुए व्यक्ति, बड़े सेवक गीत का हिस्सा, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चुना जाता है जो खुद को बलिदान के रूप में देगा। यहाँ इसका मतलब यह है कि बपतिस्मा में परमेश्वर ने जो घोषणा की है, जो मेरा मानना है कि बपतिस्मा में होती है क्योंकि बपतिस्मा में जो हो रहा है वह दर्शाता है कि यीशु यहाँ क्यों है, जो पापियों के स्थान पर जाना है जहाँ न्याय हो रहा है, और फिर उद्धार लाने के लिए उन जल से गुजरना है, कि बपतिस्मा में यह घोषणा करते हुए, परमेश्वर सिंहासनारूढ़ भाषा को जोड़ रहा है, कह रहा है कि हाँ, यह दाऊद का मसीहा है, यह वह है जो आने वाला है, और यह दाऊद का मसीहा भी सेवक है जिसे बलिदान किया जाएगा।

इसहाक की तरह, प्रिय पुत्र, सेवक जिसकी बलि दी जाएगी। यह एक आकर्षक, शक्तिशाली घोषणा है। हम यहाँ पर परमेश्वर द्वारा यीशु कौन है, इस रहस्योद्घाटन के बाद बपतिस्मा पर जल्दी से आगे बढ़ते हैं, और यहाँ पर मार्क बहुत संक्षिप्त है।

हम मार्क से नहीं जानते कि किसने क्या सुना। हम जानते हैं कि यीशु ने देखा और यीशु ने सुना। लेकिन फिर तुरन्त आत्मा ने उसे जंगल में भेज दिया।

तो, हम तुरंत पाते हैं कि बपतिस्मा के अंत में जो पहली चीज़ होती है वह है यीशु के प्रति आज्ञाकारिता। जंगल में आत्मा द्वारा ले जाए जाने का अर्थ इस्राएल से जुड़ा हुआ है। जब वे मिस्र से बाहर आ रहे थे, तब आत्मा द्वारा उन्हें जंगल में ले जाया गया था।

मैथ्यू ने यीशु की इज़राइली भाषा का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया है। और मुझे लगता है कि मार्क भी इसे थोड़ा-बहुत आगे ले जा रहा है। इसलिए, उसे आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया जाता है जहाँ वह 40 दिनों तक उपवास करता है।

फिर से, संख्या 40 महत्वहीन नहीं है। हालाँकि, मार्क हमें बताता है कि शैतान ने उसे 40 दिनों तक परीक्षा में डाला था। इसे न भूलें।

मार्क के सुसमाचार में प्रस्तुत पहला विरोधी शैतान है। उसे धार्मिक नेताओं, हेरोदेस और अन्य लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत किया गया विरोधी शैतान है।

हम इसे बार-बार देखेंगे, खास तौर पर भूत-प्रेत भगाने के मामले में। और फिर हमारे पास एक दिलचस्प बात है जिसके बारे में केवल मार्क ही हमें बताता है कि यीशु जानवरों के साथ भी था। और इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ है कि यहाँ जानवर क्यों हैं।

यीशु की सेवा करने वाले स्वर्गदूतों को अन्यत्र उठाया गया है, लेकिन जानवरों को नहीं। मार्क केवल यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि जानवर किस तरह से जंगल में आम तौर पर खतरा होते हैं। वे यीशु के लिए कोई खतरा नहीं हैं।

वह सुरक्षित रहेगा, यह संभव है। क्या यह ईडन का संकेत है? जानवर और दूसरा आदम, अगर आप चाहें, तो यहाँ एक साथ कहाँ हैं? या यह सिर्फ मार्क का ऐतिहासिक रूप से सटीक होना और यह जानना है कि जानवरों ने एलिय्याह की तरह ही उसकी देखभाल की? हम नहीं जानते।

मुझे लगता है कि जंगली जानवरों को शामिल करना इस अर्थ में महत्वपूर्ण है क्योंकि मुझे लगता है कि यह इतिहासलेखन की गुणवत्ता को दर्शाता है। और मैं यह सोचने की ओर झुकता हूँ कि यहाँ हमारे पास एक तस्वीर है कि यीशु के आस-पास का जीवन वैसा ही है जैसा कि पतन से पहले होना चाहिए था। कि यीशु के आस-पास, पतन के प्रभावों को समाप्त किया जा रहा है।

मुझे लगता है कि हम इसे उपचार में देखेंगे, उदाहरण के लिए। और निश्चित रूप से, यह केवल पतन के प्रभावों को समाप्त नहीं कर रहा है, बल्कि इसके कारण को भी समाप्त कर रहा है, जिसके बारे में हम जानेंगे। प्रस्तावना के बारे में अंतिम बात यह है कि समाप्त होने से पहले फिर से ध्यान दें कि कितना कुछ छोड़ दिया गया है।

आपने आज के व्याख्यान के दौरान कई बिंदुओं पर गौर किया होगा, मैंने उल्लेख किया कि मैथ्यू ने इस बारे में बात की, या जॉन ने इस बारे में बात की, या हम ल्यूक से जानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन घटनाओं में से बहुत सी बातें हम वास्तव में, जब हम सोचते हैं कि हम यीशु के बारे में क्या जानते हैं, तो हम मार्क से नहीं जानते। हम मैथ्यू और ल्यूक और जॉन से जानते हैं।

यह मार्क की गति रणनीति का हिस्सा है। हम बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। मार्क कुछ आयतों में जो करता है, मैथ्यू अध्यायों में करता है, और हम उस बिंदु पर पहुँचने वाले हैं जहाँ मार्क नाटकीय रूप से धीमा हो जाता है, जहाँ वह एक ही दिन के बारे में बात करने के लिए उतनी ही आयतों का उपयोग करेगा जितना उसने जॉन बैपटिस्ट के आगमन, जॉन बैपटिस्ट द्वारा यीशु के बपतिस्मा और जंगल में जाने के बारे में बात करने के लिए किया था।

जितने श्लोक इस्तेमाल करेगा, उनमें से दो श्लोक सिर्फ बाइबल के पाठ हैं, उनमें से तीन श्लोक बाइबल के पाठ के उद्धरण हैं, उतने ही श्लोक वह एक दिन के बारे में बात करने के लिए इस्तेमाल करेगा। उस एक दिन के बारे में कुछ ऐसा है जो मार्क को यह समझने के लिए महत्वपूर्ण लगता है कि यीशु कौन है। हम अगली बार इस पर चर्चा करेंगे।

धन्यवाद। आइए अध्याय 1, श्लोक 1-13 पर चलते हैं।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह मार्क 1:1-13 पर सत्र 2 है।